

**1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए (5+5 = 10 अंक):**

**(क) गीत की विशेषताएँ**

गीत, काव्य की एक ऐसी विधा है जिसे गाया जा सकता है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **लय और ताल:** गीत में एक निश्चित लय और ताल होती है, जो उसे संगीतमय बनाती है। यह गेयता ही गीत का प्राण है।
- **भाव प्रधानता:** गीत में विचारों की अपेक्षा भावनाओं की प्रधानता होती है। इसमें कवि अपने हृदयगत भावों को सरल और सुबोध भाषा में व्यक्त करता है।
- **संक्षिप्तता और मार्मिकता:** गीत प्रायः संक्षिप्त होते हैं, लेकिन वे अपने सीमित शब्दों में गहन और मार्मिक प्रभाव उत्पन्न करते हैं।
- **पुनरावृत्ति और टेक:** गीतों में अक्सर कुछ पंक्तियों या शब्दों की पुनरावृत्ति होती है, जिसे 'टेक' कहते हैं। यह गीत को स्मरणीय बनाती है और उसके केंद्रीय भाव को उभारती है।
- **सरल भाषा और बिंब विधान:** गीत की भाषा सरल, सुगम और चित्रात्मक होती है, जिससे पाठक या श्रोता आसानी से भावों से जुड़ पाते हैं। इसमें बिंबों का प्रयोग भावों को अधिक प्रभावशाली बनाता है।
- **गेयता:** यह गीत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। गीत को किसी भी समय, किसी भी अवसर पर गाया जा सकता है।

**(ख) भाव और विचार का भाषा में रूपांतरण**

भाव और विचार का भाषा में रूपांतरण सृजनात्मक लेखन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें लेखक अपनी आंतरिक अनुभूतियों और चिंतन को शब्दों के माध्यम से मूर्त रूप देता है।

- **भावों का रूपांतरण:** भाव अमूर्त होते हैं, जैसे खुशी, दुख, क्रोध, प्रेम आदि। इन्हें भाषा में व्यक्त करने के लिए लेखक को उपयुक्त शब्दों, अलंकारों, बिंबों और प्रतीकों का सहारा लेना पड़ता है। उदाहरण के लिए, "खुशी" को व्यक्त करने के लिए "मन मयूर नाच उठा" या "हृदय में फूल खिल गए" जैसे वाक्यांशों का प्रयोग किया जा सकता है। लेखक को पाठक के मन में वही भाव जगाने का प्रयास करना होता है जो उसके अपने मन में है।
- **विचारों का रूपांतरण:** विचार अधिक तार्किक और बौद्धिक होते हैं। इन्हें भाषा में रूपांतरित करने के लिए स्पष्टता, सटीक शब्दावली और सुसंगत तर्क की आवश्यकता होती है। लेखक को अपने विचारों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करना होता है, ताकि पाठक उन्हें आसानी से समझ सकें और उनसे सहमत या असहमत हो सकें। इसमें उपमा, दृष्टांत और उदाहरणों का भी प्रयोग किया जाता है।
- **चुनौतियाँ:** इस प्रक्रिया में कई चुनौतियाँ आती हैं, जैसे सही शब्द का चुनाव, भावों की गहराई को बनाए रखना, विचारों की स्पष्टता सुनिश्चित करना और पाठक तक अपनी बात को प्रभावी ढंग से पहुँचाना। एक कुशल लेखक वही है जो इन चुनौतियों को पार कर अपने भावों और विचारों को सशक्त भाषा में ढाल सके।

**(ग) पल्लवन कीजिए- "कोई लक्ष्य मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं।"**

यह उक्ति मनुष्य के अदम्य साहस और उसकी असीमित क्षमता को रेखांकित करती है। इसका अर्थ है कि संसार में ऐसा कोई भी कार्य या लक्ष्य नहीं है जो मनुष्य के दृढ़ निश्चय और पराक्रमी स्वभाव से बढ़कर हो।

मनुष्य के इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण मिलते हैं जब उसने अपने साहस के बल पर असंभव लगने वाले लक्ष्यों को भी प्राप्त किया है। चाहे वह माउंट एवरेस्ट की चोटी पर विजय प्राप्त करना हो, गहरे समुद्र की थाह लेना हो, अंतरिक्ष की यात्रा करना हो, या फिर किसी गंभीर बीमारी का इलाज खोजना हो – इन सभी उपलब्धियों के पीछे मनुष्य का अटूट साहस और इच्छाशक्ति ही रही है।

साहस केवल शारीरिक बल का नाम नहीं है, बल्कि यह मानसिक दृढ़ता, चुनौतियों का सामना करने की प्रवृत्ति और असफलता से न घबराने का भाव भी है। जब मनुष्य किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प कर लेता है, तो वह उसके मार्ग में आने वाली हर बाधा को पार करने के लिए तैयार हो जाता है। वह विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोता और अपने प्रयासों में लगा रहता है।

यह उक्ति हमें यह संदेश देती है कि हमें अपने सपनों को साकार करने के लिए कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। यदि हममें साहस है, तो हम किसी भी बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना कर सकते हैं और अपने निर्धारित लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। यह हमें अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानने और उसका उपयोग करने के लिए प्रेरित करती है।

## **2. सृजनात्मक लेखन के अर्थ और स्वरूप पर विचार कीजिए। (10 अंक)**

सृजनात्मक लेखन (Creative Writing) से तात्पर्य ऐसे लेखन से है जिसमें लेखक अपनी कल्पना, मौलिकता और व्यक्तिगत अनुभवों का प्रयोग करके कुछ नया और अनूठा रचता है। यह केवल तथ्यों या सूचनाओं को प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि भावनाओं, विचारों और अनुभवों को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करना है।

**अर्थ:** सृजनात्मक लेखन का शाब्दिक अर्थ है 'सृजन' या 'रचना' करने वाला लेखन। इसमें लेखक किसी पूर्व-निर्धारित ढाँचे या नियमों का सख्ती से पालन करने के बजाय अपनी

आंतरिक प्रेरणा और कल्पना को प्राथमिकता देता है। इसका उद्देश्य पाठक को केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि उसे भावनात्मक और बौद्धिक रूप से जोड़ना, मनोरंजन करना, विचारोत्तेजित करना या उसे एक नए दृष्टिकोण से परिचित कराना होता है। यह लेखन की वह शैली है जहाँ लेखक की व्यक्तिगत शैली, आवाज़ और रचनात्मकता खुलकर सामने आती है।

**स्वरूप:** सृजनात्मक लेखन का स्वरूप अत्यंत व्यापक और विविध है। इसमें कई विधाएँ शामिल हैं, जैसे:

- **कविता:** भावनाओं और विचारों की गेय और लयबद्ध अभिव्यक्ति।
- **कहानी:** घटनाओं और पात्रों के माध्यम से जीवन के किसी पहलू का चित्रण।
- **उपन्यास:** विस्तृत कथा, जिसमें कई पात्र और जटिल घटनाक्रम होते हैं।
- **नाटक:** संवादों और अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत की जाने वाली कथा।
- **निबंध (व्यक्तिगत/ललित):** किसी विषय पर व्यक्तिगत दृष्टिकोण और शैली में विचार प्रस्तुत करना।
- **संस्मरण/यात्रा वृत्तांत:** व्यक्तिगत अनुभवों और स्मृतियों पर आधारित लेखन।
- **पटकथा/पटकथा लेखन:** फिल्मों या टेलीविजन के लिए लिखी गई स्क्रिप्ट।
- **गीत/गजल:** गेयता और भावनाओं की प्रधानता वाले काव्य रूप।

**सृजनात्मक लेखन की प्रमुख विशेषताएँ:**

- **मौलिकता:** इसमें नए विचारों, कल्पनाओं और अभिव्यक्तियों को महत्व दिया जाता है। यह किसी की नकल नहीं होता।
- **कल्पनाशीलता:** लेखक अपनी कल्पना का प्रयोग करके ऐसी दुनिया, पात्र और घटनाएँ गढ़ता है जो वास्तविक न होकर भी विश्वसनीय लगती हैं।

- **भावनात्मकता:** यह लेखन पाठक के हृदय को छूता है और उसमें विभिन्न भावनाओं को जगाता है।
- **व्यक्तिगत शैली:** प्रत्येक सृजनात्मक लेखक की अपनी एक विशिष्ट शैली होती है जो उसे दूसरों से अलग करती है।
- **भाषा का कलात्मक प्रयोग:** शब्दों का चयन, वाक्य-विन्यास और अलंकारों का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है कि भाषा स्वयं एक कलाकृति बन जाती है।
- **संवेदनशीलता:** लेखक अपने आस-पास की दुनिया और मानवीय अनुभवों के प्रति संवेदनशील होता है और उन्हें अपनी रचनाओं में व्यक्त करता है।
- **प्रेरणा और अभ्यास:** सृजनात्मक लेखन के लिए प्रेरणा आवश्यक है, लेकिन निरंतर अभ्यास और अवलोकन से ही इसमें निखार आता है।

संक्षेप में, सृजनात्मक लेखन एक कला है जो लेखक को अपनी आंतरिक दुनिया को शब्दों के माध्यम से बाहरी दुनिया में प्रस्तुत करने का अवसर देती है, जिससे पाठक एक अनूठे अनुभव से गुजरता है।

### 3. प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की भाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए। (10 अंक)

प्रिंट माध्यम (जैसे समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें) और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम (जैसे टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट, सोशल मीडिया) की भाषा में कई महत्वपूर्ण अंतर होते हैं, जो उनकी प्रकृति, उद्देश्य और श्रोता/पाठक वर्ग के कारण उत्पन्न होते हैं।

विशेषताएँ	प्रिंट माध्यम की भाषा	इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की भाषा
प्रकृति	स्थायी, लिखित, पठनीय	अस्थायी, मौखिक/दृश्य-श्रव्य, श्रवणीय/दर्शनीय

श्रोता/पाठक	साक्षर, गंभीर पाठक	व्यापक जनसमूह (साक्षर-निरक्षर), त्वरित उपभोक्ता
शब्द चयन	औपचारिक, मानक, व्याकरणिक शुद्धता पर जोर	अनौपचारिक, बोलचाल के करीब, सरल, सहज
वाक्य संरचना	लंबे, जटिल, मिश्रित वाक्य संभव	छोटे, सरल, सीधे वाक्य, त्वरित बोधगम्यता पर जोर
स्पष्टता	शब्दों और वाक्यों की स्पष्टता पर निर्भर	शब्दों के साथ-साथ ध्वनि, चित्र, हाव-भाव से स्पष्टता
पुनरावृत्ति	कम, अनावश्यक मानी जाती है	अधिक, संदेश को दोहराने और याद रखने के लिए उपयोगी
गति	पाठक अपनी गति से पढ़ता है, रुक सकता है, दोबारा पढ़ सकता है	तेज गति, एक बार में ग्रहण करना होता है, रुकना संभव नहीं (लाइव में)
संदर्भ	अधिक विस्तृत संदर्भ, पृष्ठभूमि जानकारी संभव	सीमित संदर्भ, त्वरित जानकारी, संक्षेप पर जोर
शैली	गंभीर, विश्लेषणात्मक, विवरण प्रधान	संवादात्मक, नाटकीय, आकर्षक, प्रभावोत्पादक
उदाहरण	समाचार पत्र के लेख, संपादकीय, साहित्यिक रचनाएँ	समाचार बुलेटिन, रेडियो कमेंट्री, टीवी डिबेट, सोशल मीडिया पोस्ट, ब्लॉग
प्रतिक्रिया	विलंबित (पत्र, ईमेल के माध्यम से)	तत्काल (लाइव चैट, कमेंट, लाइक, शेयर)

व्याकरण	पूर्ण व्याकरणिक शुद्धता अपेक्षित	व्याकरणिक लचीलापन, बोलचाल की भाषा का प्रभाव
दृश्य तत्व	चित्र/ग्राफिक्स सहायक होते हैं, पर भाषा प्रधान	दृश्य/श्रव्य तत्व भाषा के पूरक, कई बार भाषा से अधिक महत्वपूर्ण

**निष्कर्ष:** प्रिंट माध्यम की भाषा अधिक स्थायी, गंभीर और औपचारिक होती है, जो विस्तृत विश्लेषण और गहन पठन के लिए उपयुक्त है। वहीं, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की भाषा अधिक तात्कालिक, सरल और संवादात्मक होती है, जो त्वरित सूचना और व्यापक जनसंचार के लिए प्रभावी है। दोनों माध्यमों की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएँ होती हैं, जिनके अनुसार उनकी भाषा का स्वरूप निर्धारित होता है।

#### 4. 'सोशल मीडिया: संवाद का नया रूप' विषय पर अनुच्छेद लिखिए। (10 अंक)

##### सोशल मीडिया: संवाद का नया रूप

इक्कीसवीं सदी में प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने हमारे संवाद के तरीकों को पूरी तरह से बदल दिया है। इंटरनेट और स्मार्टफोन की सुलभता ने सोशल मीडिया को एक ऐसी शक्ति बना दिया है, जिसने संवाद को एक नया आयाम दिया है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, लिंकडइन जैसे प्लेटफॉर्म ने दुनिया के कोने-कोने में बैठे लोगों को एक-दूसरे से जुड़ने, अपने विचार साझा करने और सूचनाओं का आदान-प्रदान करने का एक अभूतपूर्व मंच प्रदान किया है।

पारंपरिक संवाद के माध्यमों की तुलना में सोशल मीडिया ने संवाद को अधिक तात्कालिक, व्यापक और लोकतांत्रिक बना दिया है। जहाँ पहले किसी खबर या विचार को जन-जन तक पहुँचाने में घंटों या दिन लग जाते थे, वहीं अब एक क्लिक पर वह लाखों लोगों तक पहुँच

जाती है। यह व्यक्तिगत स्तर पर दोस्तों और परिवार से जुड़ने का माध्यम है, वहीं व्यावसायिक और सामाजिक स्तर पर भी इसने क्रांति ला दी है। कंपनियाँ अपने ग्राहकों से सीधे संवाद कर रही हैं, राजनेता जनता से जुड़ रहे हैं, और सामाजिक कार्यकर्ता अपने अभियानों को गति दे रहे हैं।

सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति को एक प्रकाशक और संवाददाता बना दिया है। कोई भी व्यक्ति अपनी राय, अनुभव या रचनात्मकता को दुनिया के सामने रख सकता है। इसने हाशिए पर पड़े समुदायों और आवाजों को भी एक मंच दिया है, जिससे वे अपनी बात रख सकें और समर्थन जुटा सकें। उदाहरण के लिए, किसी आपदा या आपातकाल के दौरान सोशल मीडिया सूचनाओं के आदान-प्रदान और सहायता जुटाने का एक महत्वपूर्ण साधन बन जाता है।

Duhive